वार्षिक प्रतिवेदन
2022-23

उरमूल सीमांत समिति

उरमूल सीमांत परिसर, बज्जू तेजपुरा, बीकानेर - 334305, मेल आई डी - urmul@seemant.org

अनुक्रमाणिका

क्र सं	विषय	पेज सं
1	बहुला कार्यक्रम	2-3
2	ग्रो फंड आगामी दशक की कार्य योजना	4-5
3	वाटर हार्वेस्ट कार्यक्रम	5
4	स्थानीय आजीविका संवर्धन: चारा और मशरूम की ऊर्ध्वाकार खेती (IWMI)	6
5	कॉमन फेसिलिटी सेंटर फॉर ट्रांसुमेंट पेस्टोरालिस्ट (ELRHA कार्यक्रम)	6
6	समशिक्षा कार्यक्रम	7-8
7	चाइल्ड हेल्पलाइन 1098	9
8	स्फूर्ति कार्यक्रम	9
9	आयवर्धन कार्यक्रम	10
10	आरकेसीएल कार्यक्रम	10
11	डेयरी एवं जैविक कृषि फार्म	11
12	नेशनल लेवल मॉनिटरिंग	11
13	वित्तीय प्रतिवेदन	12

1. बहुला कार्यक्रम

उरमूल सीमांत समिति द्वारा HDFC बैंक परिवर्तन के सहयोग से संचालित *बहुला कार्यक्रम* थार मरुस्थल क्षेत्र के किसानों, पशुपालकों और कारीगरों की आजीविका सशक्तिकरण की दिशा में एक अभिनव प्रयास है। इस कार्यक्रम की शुरुआत 2021 में की गई थी, जिसका उद्देश्य कृषि–डेयरी और हस्तशिल्प (टेक्सटाइल) दोनों मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत कर समुदाय की आय और पहचान को बढ़ाना है।

1.1. बेसलाइन सर्वे

- कुल 2604 परिवारों का बेस लाइन सर्वे पूरा किया गया।
- सर्वेक्षण में किसानों और पशुपालकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, कृषि-पद्धतियाँ, पशुधन संख्या, जैविक खेती की संभावनाएँ, और शिल्प से जुड़ी गतिविधियों का आकलन किया गया एवं सर्वे के आधार पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई।

1.2. किसान सहयोग

- कुल 642 किसानों को बीज, खाद, तकनीकी मार्गदर्शन और इनपुट सपोर्ट दिया गया।
- 199 एकड़ भूमि को ऑर्गेनिक खेती में परिवर्तित किया गया।
- गेहूँ, काला गेहूँ, जीरा, चना और सरसों की फसलें उगाई गई, जिनसे 80 टन से अधिक उत्पादन हुआ।
- किसानों को जैविक प्रमाणन एवं बाज़ार से जोड़ने के लिए 4 किसान प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए।

1.3. डेयरी एवं दुग्ध प्रसंस्करण इकाई

- दूध प्रसंस्करण इकाई को तकनीकी रूप से उन्नत किया गया। नई मशीनें जैसे पैकेजिंग मशीन, बटर चर्नर, मिनी चिलर, मिल्क एनालाइज़र लगाई गईं।
- यह यूनिट उच्च गुणवत्ता वाले दुग्ध उत्पाद जैसे – पनीर, दही, छाछ, मक्खन और घी का उत्पादन करती है। विशेष पहल के रूप में ऊंटनी के दूध से नमकीन, मीठे और शुगर-फ्री बिस्कुट, आइसक्रीम, घी एवं कैमेल मिल्क चीज़ (हैलूमी, फेटा, चेडर) तैयार कर बीकानेर, जैसलमेर और जोधपुर जैसे शहरों में सफलतापूर्वक विपणन किया जा रहा है। इससे न केवल पशुपालकों की आमदनी बढ़ रही है, बल्कि मरुस्थलीय क्षेत्र के विशेष उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान भी मिल रही है।
- बहुला फूड्स प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना एवं बहुला नेचुरल्स के तहत उत्पादों की ब्रांडिंग और पैकेजिंग शुरू की गई।

1.4. कारीगरों का सशक्तिकरण

- 2 फाइबर प्रोसेसिंग सेंटर्स (बीकानेर और जोधपुर) स्थापित किए गए।
- 50 गाँवों से कारीगरों को जोड़ा गया, जिनमें से 354 महिला कारीगरों को कताई, बुनाई और कार्डिंग का प्रशिक्षण मिला।
- 14 प्रशिक्षण सत्र आयोजित हुए, जिनमें महिलाओं ने ऊन आधारित नए उत्पाद विकसित करना सीखा।
- बज्जू में प्राकृतिक रंगाई इकाई स्थापित हुई, जहाँ से 20 नए उत्पादों का निर्माण हुआ, जिनमें स्कार्फ, स्टोल, कुशन कवर, कालीन और बैग शामिल हैं।
- ऊन आधारित उत्पादों के मरकेतिंग के लिए सामाख्या सस्टैनेबल सामाजिक उद्यम को प्रोत्साहित किया।

1.5. सामुदायिक सहभागिता

- 947 महिलाओं की सामुदायिक बैठकों का आयोजन किया गया, जिनमें निर्णय लेने, समूह बचत, और आजीविका के अवसरों पर चर्चा हुई।
- महिलाओं की भागीदारी से स्व-सहायता समूहों की कार्यक्षमता में वृद्धि हुई।

1.6. पशुपालन एवं चारा सहयोग

- 60 पशुपालकों को चारा, टीकाकरण और तकनीकी उपकरणों का सहयोग दिया गया।
- सौर ऊर्जा संचालित हाइड्रोपोनिक्स चारा उत्पादन और पशुपालकों के लिए फील्ड ट्रेनिंग भी आयोजित हुई।

1.7. ब्रांड लॉन्च और मार्केटिंग

- बहुला नेचुरल्स (एग्री-डेयरी उत्पादों के लिए) और मगरा (ऊन एवं बिल्ट-एनवायरनमेंट उत्पादों के लिए) ब्रांडस लॉन्च किए गए।
- उत्पादों की बिक्री स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक शुरू हुई, जिससे समुदाय को सीधा लाभ मिला।
- अलग अलग स्तर पर आयोजित होने वाली प्रदर्शिनियों में भाग लेना शुरू किया, जिससे किसानों एवं आर्टिसनों द्वारा तैयार उत्पादों के लिए बाजार की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा सके।
- बहुला नेचुरल्स ब्रांड के नाम से ऊंटनी के दूध का पायलट किया गया।

2. ग्रो फंड : आगामी दशक की कार्ययोजना

एडलगिव फाउंडेशन द्वारा स्थापित GROW फंड (Grassroots Resilience, Ownership, and Wellness Fund) एक अभिनव पहल है, जिसका उद्देश्य भारत के 100 प्रभावी और जमीनी स्तर पर काम कर रही गैर-लाभकारी निम्नलिखित रूप से सशक्त बनाना है -

- **संगठनात्मक सशक्तिकरण:** संस्थाओं की आंतरिक क्षमता को बढ़ाना, ताकि वे अपने मिशन को प्रभावी ढंग से पूरा कर सकें।
- **सततता और भविष्य की तैयारी:** संस्थाओं को दीर्घकालिक स्थिरता और विकास के लिए तैयार करना।
- **महत्वपूर्ण कार्यों का समर्थन:** कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न संकटों से उबरने के लिए आवश्यक कार्यों का समर्थन करना।

2.1. दो दिवसीय कार्यशाला

दिनांक 18 से 19 जनवरी 2025 को आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में आगामी दशक की कार्ययोजना पर गहन मंथन किया गया। इस कार्यशाला में कोर कमेटी एवं विभिन्न उपसमितियों द्वारा तैयार की गई कार्ययोजनाओं का प्रस्तुतिकरण हुआ। कुल 15 सत्रों के माध्यम से कार्ययोजना की समीक्षा, चर्चा एवं आगे की रणनीति तय की गई।

कोर कमेटी के लिये पूर्व निर्धारित 6 प्रस्तुति पर विस्तार से प्रस्तुति दी गई, जिनमें –

1. **प्राकृतिक संसाधन :** मरुस्थलीय क्षेत्र के जल, भूमि, वनस्पति एवं ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण एवं उपयोग।
2. **डिजिटल सेवाएँ :** किसानों व ग्रामीणों को समय पर सूचना, प्रशिक्षण और बाजार से जोड़ने हेतु तकनीकी प्लेटफॉर्म का सृजन।
3. **सरकार की कल्याणकारी योजनाएँ :** योजनाओं तक समुदाय की पहुंच और उनमें प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करना।
4. **सेवा प्रदाताओं व उत्पादकों के संयुक्त उपक्रम :** सामाजिक उद्यमों और सहकारी समितियों को सुदृढ़ करना।
5. **आयवर्धन कार्यक्रम :** पशुपालन, कृषि, शिल्प और गैर-कृषि आय के नए साधन विकसित करना।
6. **पैरवी :** नीतिगत हस्तक्षेप, अधिकारों के संरक्षण और सरकारी स्तर पर संवाद की प्रक्रिया।

उपसमितियों के लिये निर्धारित कार्यों पर भी विस्तृत चर्चा हुई –

1. उरमूल सीमांत की नीतियाँ,
2. वित्तीय एवं मानव संसाधन जुटाना
3. परिसर प्रबंधन,
4. मानव संसाधन विकास,
5. पहुंच विस्तार और
6. उरमूल सीमांत का मूलभूत मूल्य (कोर वेल्यू)।

इसके अलावा तीन विशिष्ट सत्र आयोजित हुए –

- आकृति श्रीवास्तव द्वारा सामूहिक उपक्रमों का डिजाइन,
- विजया स्विधा (चित्रिका, हैदराबाद) द्वारा उत्पादक संगठनों की प्रेरणा एवं समन्वयन,
- श्री आर.के. अनिल द्वारा संगठनात्मक संस्कृति एवं अगले दशक की योजना पर विचार-विमर्श।

2.2. स्टाफ क्षमतावर्द्धन प्रशिक्षण

21 से 23 जनवरी 2025 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित हुआ, जिसमें पुणे से आए संदर्भ व्यक्ति श्री निलेश मंत्री ने विभिन्न खेलों व गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण पर प्रशिक्षण दिया। इसमें सूक्ष्म नियोजन, स्पष्ट उद्देश्य निर्धारण, कार्य विभाजन, क्षमता निर्माण, प्रोत्साहन, परिस्थिति अनुसार नेतृत्व, प्रभावी संचार, नीतिगत नियमों का निर्धारण, संयुक्त जवाबदेही, मूल्यांकन बैठकें तथा मजबूत संबंधों पर विशेष जोर दिया गया। यह प्रशिक्षण संगठन के अगले दशक की तैयारी हेतु महत्वपूर्ण साबित हुआ।

3. वाटर हार्वेस्ट कार्यक्रम

बीकानेर जिले में गर्मियों में 50 डिग्री से ऊपर और सर्दियों में शून्य से नीचे तापमान चला जाता है। ऐसे में जल संकट ग्रामीण जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। उरमूल सीमांत समिति ने राणासर ग्राम पंचायत के अंतर्गत राणासर, लाखासर और पाबूसर सिन्दूका गांवों का सर्वे किया, जहाँ ग्रामीणों को जलदाय विभाग से नियमित आपूर्ति नहीं मिल रही थी। पता चला कि ग्रामीणों को हर माह 2000–3000 रुपये पानी पर खर्च करने पड़ते थे। इस समस्या का समाधान खोजने हेतु वाटर हार्वेस्ट के सहयोग से 76 परिवारों के लिये भूमिगत जलकुंडों का निर्माण किया गया। प्रत्येक जलकुंड 22,000 लीटर क्षमता का है और छतों से पानी सीधे पाइपलाइन के माध्यम से इसमें संग्रहित होता है।

पूर्व मानसून की बारिश से इन जलकुंडों में औसतन 15,000 लीटर पानी संग्रहित हुआ। इससे परिवारों की सात माह तक पानी की आवश्यकता पूरी होगी, जिससे प्रत्येक परिवार लगभग 10,500 रुपये की बचत कर

सकेगा। साथ ही, पहले खरीदे गए अशुद्ध पानी से होने वाली बीमारियों पर जो खर्च होता था, वह भी कम होगा।

4. स्थानीय आजीविका संवर्धन: चारा और मशरूम की ऊर्ध्वाकार खेती (IWMI)

स्थानीय आजीविका को टिकाऊ बनाने हेतु संस्था ने सौर ऊर्जा संचालित जलवायु-नियंत्रित ऊर्ध्वाकार खेती को बढ़ावा दिया है। इस पद्धति में गांवों के सामुदायिक केंद्रों के पास विशेष पॉलीहाउस संरचनाएं स्थापित की गईं, जिनमें कई स्तरों पर ऊर्ध्वाकार चारा उत्पादन प्रणालियाँ लगी हुई हैं। इन पॉलीहाउसों में प्रशिक्षित किसान प्रतिदिन लगभग 500 से 600 किलोग्राम उच्च-प्रोटीन चारा तैयार करते हैं। यह चारा 100% स्थानीय डेयरी पशुओं की जरूरत को पूरा करता है और दूध उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत तक की वृद्धि सुनिश्चित करता है।

यह मॉडल न केवल पशुपालकों के लिए आय के नए स्रोत खोलता है बल्कि पश्चिमी राजस्थान जैसे शुष्क और जलवायु-प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य, चारा और जल सुरक्षा को भी मजबूत करता है। इस पद्धति को लागू करने से पहले 13 गांवों में घरेलू सर्वेक्षण किए गए, जिनमें खंदासर, नांदड़ा, नेणिया, चिमाणा, हनुमाननगर, भेलू, सारणपुरा, संतोकनगर, इमामनगर, खिंखनिया पट्टा, खारा लोहान और सियाणा जैसे गांव शामिल थे। सर्वेक्षण में पशुओं की आबादी, उनके लिए चारे और पानी की उपलब्धता, पशुपालकों की पारंपरिक आजीविका और आधुनिक चुनौतियों की गहन पड़ताल की गई।

पशुपालन इस क्षेत्र की परंपरागत और प्रमुख आजीविका है, लेकिन जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी के कारण कई परिवार अब गैर-पशुपालक गतिविधियों पर भी निर्भर हो गए हैं। संस्था का उद्देश्य इन परिवारों को पुनः मजबूत करना और पशुपालन को आधुनिक तकनीक से जोड़कर लाभकारी बनाना है।

4.1. बहुला फॉडर स्टेशन, बज्जू एवं घंटियाली

सर्वेक्षण और क्षेत्रीय आवश्यकताओं को देखते हुए, संस्था ने चिमाणा केंद्र के नजदीक गांव घण्टियाली की निवासी सुश्री पालुदेवी के आवासीय परिसर में 20×8 मीटर क्षेत्र में एक उन्नत चारा स्टेशन का निर्माण कार्य पूर्ण किया। यह बहुला फॉडर स्टेशन, बज्जू दिसंबर 2021 से सक्रिय रूप से संचालित है।

जनवरी–फरवरी 2022 में इस स्टेशन से 5046 किलो हरे चारे का उत्पादन किया गया, जिसमें से 4946 किलो हरा चारा संस्था की डेयरी यूनिट को उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त, 57 किलो हरे चारे को काटकर सोलर ड्रायर में सुखाकर 4.5 किलो उच्च गुणवत्ता वाला व्हीट ग्रास पाउडर तैयार किया गया। यह पाउडर पशुओं के लिए पोषक आहार होने के साथ-साथ बाजार में भी एक मूल्यवान उत्पाद साबित हो रहा है।

इन दोनों चारा स्टेशन पर मुख्य तौर पर गेंहू, मक्का, जौ आदि से चारा उगाने का प्रयास किया गया जिसमें गेंहु से सबसे अच्छा उत्पादन लिया गया। गेंहू की उत्पादकता स्थानीय स्तर पर हो जाती है इसलिए बीज की उपलब्धता से संबंधित भी कोई चुनौती नहीं है।

5. कॉमन फेसिलिटी सेंटर फॉर ट्रांसुमेंट पेस्टोरालिस्ट (ELRHA कार्यक्रम)

भेड़पालकों के लिए कॉमन फैसिलिटी सेंटर (CFC) नारायणपुरा और लूणा में स्थापित किए गए। इन केंद्रों पर निम्नलिखित सुविधाएं की गई है :

- भेड़ों के लिए चारा उत्पादन (हाइड्रोपोनिक, प्राकृतिक घास, ग्वार आदि) की व्यवस्था।
- पानी की उपलब्धता हेतु 70,000 लीटर क्षमता वाले 2 कुण्डों का निर्माण।
- भेड़ों की स्वास्थ्य जांच व उपचार, ऊन कटाई की सुविधा।
- ऊन का उचित उपयोग – बाजार बिक्री के अतिरिक्त ऊन से गृह सज्जा व फेल्ट उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण।
- भेड़ की मींगणी खाद – कोकोपिट के साथ मिलाकर उपयोग से मिट्टी की उर्वरता व नमी में वृद्धि।
- मार्च 2023 में जर्मन अधिकारी *ईशाबेल* ने परियोजना का निरीक्षण कर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

6. समशिक्षा कार्यक्रम

6.1. हितधारकों तक वीडियो पहुँचाने के लिए स्कूल यात्राएँ

जोधपुर जिले में डिजिटल लर्निंग और करियर जागरूकता को बढ़ाने के उद्देश्य से कार्यक्रम दल एवं फील्ड टीम ने एक व्यापक अभियान चलाया। टीम में अशोक जी, निशांत जी, शुभ्रा, आकाश, संतोमा जी और कल्पना जी शामिल थे।

6.2. विद्यालाओं में प्रचार प्रसार

- केजीबीवी स्कूल : ओसियां, रतकुरिया, बालेसर, भावी, नंदवन, जगरिया और फलोदी के सरकारी स्कूल छात्रों को डिजिटल शिक्षा और करियर विकल्पों से परिचित कराया गया।
- विभिन्न करियर अवसरों पर चर्चा करते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया गया।
- छात्रों ने सत्रों में सक्रिय भागीदारी की और समशिक्षा द्वारा बनाए गए वीडियो का आनंद लिया।

6.3. समशिक्षा यूट्यूब चैनल प्रबंधन

- परियोजना के तहत कक्षा 6 से लेकर 10 तक के पाठ्यक्रम को डिजिटलाइज कर समशिक्षा यूट्यूब चैनल को सशक्त रूप से संचालित किया गया।
- सभी वीडियो को सार्वजनिक किया गया।

- सह-पाठ्यक्रम संबंधित वीडियो का पोस्ट-प्रोडक्शन कार्य सुव्यवस्थित ढंग से किया गया।इस प्रयास ने चैनल को एक विश्वसनीय और शैक्षणिक सामग्री से भरपूर मंच के रूप में स्थापित किया।

6.4. लूणकरणसर में डिजिटल लर्निंग एवं करियर परामर्श

- **संवाद एवं सहयोग:** उरमूल सेतु संस्थान, लूणकरणसर का दौरा कर सचिव श्री रामेश्वर जी और समन्वयक मुखराम जी से शिक्षा संबंधी विचारों पर चर्चा की गई।
- **फील्ड विजिट्स:** बिंझरवाली, मकड़ासर और रामबाग गाँवों में जाकर ओपन स्कूल बोर्ड के परीक्षार्थियों से संवाद किया गया।
- बज्जू खालसा और बज्जू तेजपुरा में बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा और डिजिटल साक्षरता के प्रति जागरूक किया गया।
- **प्रेरणा गतिविधियाँ:** बच्चों को चाइल्डलाइन 1098, आरएस-सीआईटी पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन शिविर की जानकारी देकर प्रेरित किया गया।

6.5. दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर

उरमूल सीमांत समिति परिसर में 15 दिनों का ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया।

- छात्रों को रोजाना रचनात्मक गतिविधियों में शामिल किया गया।
- समशिक्षा वीडियो के माध्यम से बाल अधिकार, शिक्षा का अधिकार, यौन शोषण और मासिक धर्म स्वच्छता पर चर्चा की गई।
- इस शिविर ने बच्चों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल और सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता विकसित की।

6.6. महिला अधिकारिता निदेशालय द्वारा जिला स्तरीय कार्यशाला

- 15 जून 2022, रवींद्र रंगमंच, बीकानेर में आयोजित कार्यशाला में लगभग 1000 शिक्षिकों ने भाग लिया।
- पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन द्वारा विस्तृत जानकारी, प्रश्नावली और चर्चाओं के माध्यम से सहभागिता एवं समशिक्षा वीडियो की स्क्रीनिंग।
- शिक्षकों को बाल सुरक्षा पर प्रशिक्षण दिया गया।
- चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 द्वारा "कोमल" नामक लघु फिल्म दिखाई गई, जिसमें बच्चों की सुरक्षा और शिक्षकों की भूमिका स्पष्ट रूप से समझाई गई।

- कठपुतली शो के माध्यम से छोटे बच्चों से संवाद किया गया और उनकी चिंताओं को समझा गया।

7. चाइल्ड हेल्पलाइन 1098

- चाइल्डलाइन टीम द्वारा समुदाय में बाल सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया।
- मार्च 2022–जून 2022 तक 12 प्रकरण दर्ज, जिनमें से 10 का निस्तारण हो चुका है और 2 प्रकरण लंबित हैं।
- शक्ति अभियान के तहत माहवारी स्वच्छता प्रबंधन और *गुड टच-बैड टच* विषय पर कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। जिसमें कोलायत और बज्जू पंचायत समितियों में कुल 275 प्रतिभागी शामिल हुए। बालिकाओं को माहवारी स्वास्थ्य और लैंगिक सुरक्षा पर जागरूक किया गया एवं बच्चों और किशोरियों को 1098 पर कॉल करने की प्रक्रिया समझाई गई।

8. स्फूर्ति कार्यक्रम

भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME) द्वारा *स्फूर्ति कार्यक्रम* के अंतर्गत उरमूल सीमांत समिति को *स्पेशल पर्पज व्हीकल (SPV)* संस्था के रूप में चयनित किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत उरमूल ट्रस्ट संचालन संस्था, डेजर्ट रिसोर्स सेंटर तकनीकी एजेंसी के रूप में, और उरमूल सीमांत समिति SPV संस्था के रूप में कार्य कर रही है।

बज्जू कैम्पस में *नेचुरल डाइंग यूनिट* का निर्माण किया जा रहा है। यह भवन सस्टेनेबल आर्किटेक्चर तकनीक और स्थानीय सामग्री से निर्मित किया जा रहा है।

8.1. अब तक प्राप्त योगदान (₹ में)

- **भारत सरकार (MSME)** – 2,13,36,500
- **उरमूल ट्रस्ट** – 9,85,000
- **उरमूल सीमांत समिति** – 49,69,583
- **डेजर्ट रिसोर्स सेंटर** – 32,08,383

8.2. प्रमुख कार्य

- HDFC बैंक परिवर्तन से 36,71,202 रुपये का अतिरिक्त योगदान सुनिश्चित किया गया।
- संस्था की कार्यकारिणी में 33% महिला प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु 5 महिला दस्तकारों (तारीबाई, समदाबाई, चम्पा, गुलशन और चांदनी) को शामिल किया गया।

- जून 2022 तक 91 महिला दस्तकारों का बीमा कराया गया था, जबकि इस वर्ष अतिरिक्त 173 महिलाओं को जोड़कर कुल 264 महिला दस्तकारों का दुर्घटना बीमा किया गया।

9. आयवर्धन कार्यक्रम

इस वर्ष आयवर्धन कार्यक्रम (IGP) का संचालन स्वतंत्र रूप से किया गया। विशेष बात यह रही कि संपूर्ण बिक्री शत-प्रतिशत *बी-टू-सी (B2C)* मॉडल के अंतर्गत हुई। पिछले 30 वर्षों से संस्था द्वारा कशीदाकारी और अन्य हस्तशिल्प उत्पादों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, उनकी आय बढ़ाने तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का जो प्रयास किया गया, उसी का परिणाम है कि इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया गया। वर्तमान में हमारे उत्पाद निम्नलिखित ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं – ओखाई, जयपौर, उरमूल डेज़र्ट क्राफ्ट।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न शहरों में प्रदर्शनी आयोजित की गई। विशेषकर बैंगलोर प्रदर्शनी में बिक्री उल्लेखनीय रही।

9.1. लक्ष्य एवं उपलब्धि (वित्तीय वर्ष 2022–23)

अवधि	लक्ष्य (₹)	उपलब्धि (₹)
पहली तिमाही	20,00,000	16,12,197
दूसरी तिमाही	50,00,000	16,00,636
तीसरी तिमाही	50,00,000	21,11,343
चौथी तिमाही	30,00,000	15,59,786
योग	**1,50,00,000**	**68,83,962**

10. आरकेसीएल कार्यक्रम

जनवरी 2022 में संस्था ने महिला कार्यकर्ता लक्ष्मीरानी को आरकेसीएल प्रोजेक्ट संचालन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी। उस समय अप्रैल 2022 में मात्र 3 विद्यार्थी ही जुड़े हुए थे। लेकिन लक्ष्मीजी ने लगातार फ़ील्ड में जाकर ग्रामीण परिवारों और युवाओं से संपर्क किया, जागरूकता अभियान चलाए और शिक्षा के महत्व को समझाया। उनके प्रयासों से 140 से अधिक छात्र-छात्राएं आरकेसीएल से जुड़े और उनके ऑनलाइन फॉर्म सफलतापूर्वक भरे गए।

बज्जू केंद्र को गति देने और अधिक युवाओं को जोड़ने के उद्देश्य से उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर ने भी विशेष सहयोग किया। ट्रस्ट द्वारा प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को ₹1500 की आर्थिक सहायता दी गई, जिसके

परिणामस्वरूप विद्यार्थियों ने लगभग आधी फीस में ही गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस सहयोग के लिए संस्था की ओर से ट्रस्ट के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया गया। अप्रैल 2022 से आरकेसीएल केंद्र का संचालन पूरी तरह से उरमूल सीमांत समिति के अपने संसाधनों से किया जा रहा है। इससे स्थानीय स्तर पर कौशल विकास और रोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

11. डेयरी एवं जैविक कृषि फार्म

- **गाय पालन** – डेयरी में 44 पशु (18 दूधारू गायें, 1 सांड, 6 बछड़े, 18 बछड़ियां) रखे गए। अगस्त से गायों को खुले चरागाह में चराने से 30,000 रुपये की सूखे चारे की बचत हुई। दूध बिक्री से 95,000 रुपये आय हुई। 4 बछड़ियों को दूधारू गाय बनाकर 1,20,000 रुपये मूल्य का संपत्ति सृजन हुआ।
- **अजोला घास** – 6 पिटों में उत्पादन, रोजाना औसत 5 किलो उपयोग। दूध की मात्रा और गुणवत्ता (4–5 फैट) में सुधार।
- **फलदार पौधे** – कुल 365 पौधे (नींबू, आवला, अनार, बेर, मोरिंगा, शहतूत आदि) लगाए गए। नींबू, अनार और आवला पर फल आना शुरू।
- **वर्मी कम्पोस्ट खाद** – 4 पिटों से 50–60 क्विंटल खाद उत्पादन (मूल्य 30,000 रुपये) हुआ। इसका प्रयोग गेहूं और अन्य फसलों में किया जाएगा।
- **देशी बाजरी** – नवाचार के रूप में चारा हेतु उत्पादन किया गया। यह 15 फुट तक लंबी हुई और बेहतर परिणाम मिले। साथ ही मोठ की फसल से भी चारा और दाना प्राप्त हुआ।

12. नेशनल लेवल मॉनिटरिंग

संस्था को ग्रामीण विकास मंत्रालय एवं पंचायतीराज मंत्रालय द्वारा विभिन्न योजनाओं की राष्ट्रीय स्तर पर मॉनिटरिंग का दायित्व सौंपा गया –

- **विशेष मॉनिटरिंग (मई 2022)** : मध्यप्रदेश के जालौन व झबुआ जिलों की 12-12 ग्राम पंचायतों में प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) और मनरेगा की समीक्षा।
- **विशेष मॉनिटरिंग (अगस्त–सितंबर 2022)** : मिजोरम के आईजोल व मामित जिलों की 12-12 ग्राम पंचायतों में योजनाओं की ग्रामसभा के माध्यम से निगरानी।
- **रेगुलर मॉनिटरिंग (जनवरी–फरवरी 2023)** : जम्मू-कश्मीर के अनन्तनाग, कुलगाम, पुंछ, राजौरी, कुपवाड़ा और किश्तवार जिलों की 10-10 पंचायतों में प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, डिजिटल

इंडिया लैंड रिकॉर्ड मॉडर्नाइजेशन, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण, स्वामित्व योजना एवं पंचायत सत्यापन का कार्य।

13. वित्तीय प्रतिवेदन

BALANCE SHEET
As on 31st March, 2023

Previous Amount	LIABILITIES	AMOUNT (Rs. Ps.)	AMOUNT (Rs. Ps.)	Previous Amount	ASSETS	AMOUNT (Rs. Ps.)	AMOUNT (Rs. Ps.)
1000000	**SOCIETY FUND:** Balance Brought Forward		1000000	749880.75	**RECOVERABLE PROJECT GRANT** (As per Schedule "C")		1,686,802.87
3700	**MEMBERSHIP FUND:**		3772	10937764.13	**FIXED ASSETS:** (As per Schedule "F")		11916863.13
8700041.13	**PROJECT CAPITAL GRANT FUND:** (As per Schedule "A")		10774140.13	3503930.91	**INVESTMENT**		3571386.91
					Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c 0133)	84579	
					Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c 0135)	137471	
846525	**UNSPENT PROJECT GRANT:**		83172.18		Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c 11219)	700348	
	FCRA (As per Schedule "B")	83172.18			Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 11218)	716884	
	LOCAL (As per Schedule "C")	-			Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 11217)	477862	
					Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 28271)	73213	
13448070.33	**OTHER FUND** (As per Schedule "D")		9768372.2		Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 22810 Dolaya)	79893	
					Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 30060)	245143	
					Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 30061)	367268	
					Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 33436)	331537	
717.84	**LOAN ACCOUNT** OD Account Bank of Baroda Sardulganj, Bikaner A/c No. 19550100000348		826.11		Fixed Deposit with Bank of Baroda (A/c no 33437)	331525	
					Fixed Deposit with SBI, Bajju	149283.51	
					Post Office Saving A/C	250	
2183261.4	**CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS** (As per Schedule "E")		3094816.2	8171225.4	**CURRENT ASSETS, LOANS & ADVANCES:** Inventories (As per Schedule "G")		8721524.22
4471391.18	**INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT** Local Fund:		7635843.88	376031.13	**LOANS, ADVANCES & DEPOSITS** (As per Schedule "H")		338836
	Balance Brought Forward	4471391.18					
	Add: Surplus for the year	3,164,452.70					
				1683743.69	**SUNDRY DEBTORS** (As per Schedule "I")		4486784.18
1035419.3	**FCRA Fund:**		533002.4				
	Balance Brought Forward	1,035,419.30					
	Less: Deficit for the year	562,417.10		4359494.22	**CASH & BANK BALANCES** (As per Schedule "J")		8943425.18
					NOTES ON ACCOUNTS (As per Schedule "K")		
32,916,838.98	**Total**		**32,887,445.18**	**32,916,838.98**	**Total**		**32,887,445.18**